जल सत्याग्रह 2007 का मनत्व्य

प्रकृति प्रदत्त पानी सबके प्राण हैं। राज–समाज और सृष्टि सब का इस पर समान हक है। जीवन का आधार जल किसी एक व्यक्ति और किसी एक कम्पनी की बपोती नही है। सब के जीवन **'जल'** को किसी भी कम्पनी के हाथ देना हमारें राष्ट्रहित में नही है। जल जीवन के लिए **'सत्य'** है। जल बिरादरी अपनी सरकार से इस **'सत्य को स्वीकारनें का आग्रह'** करती है। हम सब जल बिरादरी से जुडे हुए हैं, इसलिए जल को स्वंय समझकर, दूसरों को भी हुऐ समझाते और स्वयं जल सहेजते हुए आज 18 अप्रैल को गांधी बलिदान स्थल पर उक्त **'सत्य'** को मनवाने का **'आग्रह'** पूरे समाज के सामने रखने हेतु दिल्ली से देहात एवम् देशभर के सभी राज्यों की राजधानियों में जाकर 'जल **सत्याग्रह**' करेंगे।

जल सत्याग्रह 2007 का लक्ष्य

जल प्रकृति और मानव का साझा है। इसके प्रबन्धन की जुम्मेदारी मानव और प्रकृति के हित में सरकार की है। जल का कोई भी मालिक नही है। जल को किसी एक के केवल लाभ की वस्तु नही बनने देगें। जल **'सब के शुभ् का आधार'** बनाऐ रखेंगे। यह **'साझी विरासत'** के रूप में ही कायम रहेगा। जल पर मानव का मौलिक और प्रकृति प्रदत्त साझा **'मानव अधिकार'** बनाये रखना है। जल की जीवन हेतु उपलब्धता व सुरक्षा सबको समान रूप से प्रदान कराना सरकार की जुम्मेदारी सुनिश्चत करानी है। मानव और प्रकृति की जल पर हकदारी जलनीति 2002 में बदलने की सरकारी कोशिश हुई है। इसे उल्टवाना है। जल बिरादरी जल को सब के शुभ् का आधार, साझी विरासत और जीवन हेतु जल प्राप्त करने की सुरक्षा का मानव अधिकार बनाये रखना अपने जल सत्याग्रह का लक्ष्य मानती है।

जल सत्याग्रह 2007 के कार्यक्रम

1.विद्यालय, महाविद्यालयों में जल साक्षरता और सवांद। शिक्षा पाठय्क्रम में जल शामिल कराने की विद्यालयों में मांग उटवाना है।

2.गांवो–देहातों–नगरों–शहरों के समुदायों को जल सहेजने हेतु तैयार करना। सहेजने की विधी सिखाना व भूजल भरवाना है। जल के अनुशाषित उपयोग हेतु अनुकूल खेती चक्र बनवाना।

3.मिडिया से जल साक्षरता बढानें हेतु निवेदन। मिडिया के साथ जल परिसंवाद और प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना।

4.राजनेताओं समाजिक कार्यकर्ताओं पत्रकारों की जल जुम्मेदारी और हकदारी को जौडकर काम करने में जुटाना।

5.सरकार जननीति में जल को 'जीवन का आधार' रूप में मान्यता दिलाने हेतु जन दबाव बनवाना है। इस हेतु जल चिन्तन शिविर सभी राज्यों की राजधानी में आयोजित करना।

6.बोतल बन्द पानी खरीद कर नही पीयें। इस हेतु जनमानस तैयार करके, कोक–पेप्सी आदि छुड़वाना। कोक–पेप्सी जैसे पेय सेहत हेतु ठीक नही है। इससे शोच पोट धोने के प्रर्दशन करना है।

7.नदियों का नीजिकरण रूकवानें, जल शोषको, प्रदूषकों के कारखानों से जल लूट और प्रदूषण रूकवाना है। नदियां, नालें नही बने। प्रत्येक गांव नगर नदियों को माल ढोन वाले रेल के डिब्बे नही बनायें। बल्कि इनके साथ मॉ जैसे व्यवहार करें। इस हेतु उद्योगपतियों के साथ सवांद शिविर आयोजित करेगें।